संवाद की सार्थकता तभी है जब उसके मूल में सच्ची चिंता और बदलाव के प्रति तीव्र इच्छा हो । हमारे लिए यह प्रीतिकर अनुभव है कि संवाद के प्रति ऐसा गंभीर सरोकार मौजूद है । हम इसे सामने लाने की कोशिश में हैं । इस बार यदि अब तक लगभग सार्वजनीन हो चुके 'न्यूनतम अधिगम स्तर' पर प्रतिवाद किया गया है तो दूसरी और 'विमर्श' पर प्रतिक्रिया के बहाने ही सही शिक्षा के भाषायी माध्यम और शिक्षा में देशज संस्कृति के क्षरण जैसे ज्वलंत मसलों को उठाया गया है । संवाद के लिए कोई कृत्रिम उपक्रम कारगर नहीं हो सकता लेकिन सहज खुलती बातचीत के प्रति हमारी जिज्ञासा बनी रहेगी।

न्यूनतम अधिगम स्तर : दूसरा पहलू

❑ प्रभा

देश में इस समय प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाकर उसके सार्वजनीनकरण की बाह्यवित्त पोषित परियोजनाएं मुहिम के तौर पर शुरू हुई हैं । राजस्थान में भी लोकजुम्बिश तथा जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के कार्य को निष्पादित किया जा रहा है । गुणात्मक सुधार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत स्वीकार की गई न्यूनतम अधिगम स्तर योजना को लागू किया जा रहा है । इसके लिए बड़े पैमाने पर पुस्तकें तैयार कर शिक्षकों के प्रत्येक वर्ष आवर्ती प्रशिक्षण किए जा रहे हैं । इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विषय वस्तु के छोटे–छोटे टुकड़ों में बांट कर उन्हें कक्षा–कक्ष में बच्चों को पढ़ाना तय किया गया है । विषयवस्तु के प्रत्येक टुकड़े को 'दक्षता' कहा गया है । कुछ परीक्षण यह भी बता रहे हैं कि इससे बच्चों का उपलब्धि स्तर बढ़ा है ।

इन सबके बावजूद न्यूनतम अधिगम स्तर पाठ्यक्रम का दूसरा पक्ष भी है । उसे जान लेना भी जरुरी है । जब तक किसी भी चीज के दोनों पक्ष मालूम न हों तो उसको अपनाना एक नया अंधविश्वास बन सकता है । न्यूनतम अधिगम स्तर का दूसरा पक्ष इस प्रकार है –

1. न्यूनतम अधिगम स्तर पाठ्यक्रम में मूल्यांकन की विधा की एकरूपता होने के कारण बच्चों की विविध योग्यताओं पर आधारित शिक्षण विधाओं को नकार दिया गया है ।

2. न्यूनतम अधिगम स्तरों के माध्यम से सीखने का अति–मानकीकरण हो जाने से पूरी शैक्षिक प्रक्रिया नई जड़ता में चली गई है । ज्ञान की समग्रता को इससे आघात पहुंचा है।

3. न्यूनतम अधिगम स्तरों ने पाठ्यक्रम को एक नये अति–नियंत्रित सार्वजनीन सांचे में ढ़ाल दिया है ।

4. न्यूनतम अधिगम स्तर पाठ्यक्रम में बच्चों के सीखने में गति तथा ढंगों में लचीलेपन के लिए कोई गुंजाइश नहीं ।

5. इस पाठ्यक्रम से शिक्षकों को पहल करने तथा स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों को पाठ्यक्रम में शामिल करने के अवसर समाप्त हो गए हैं ।

न्यूनतम अधिगम स्तरों तथा दक्षता–आधारित शिक्षण का उद्गम स्थल व्यवहारवाद है । व्यवहारवाद के जनक एडवर्ड थार्नडाइक, जैम्स वाटसन आदि रहे हैं । उन्होंने पशुओं के जीवन तथा व्यवहार के बारे में खोजें की और यह प्रतिपादित किया कि मनोविज्ञान तथा सीखने की प्रक्रियाएं तो केवल व्यवहार तथा उसके उद्दीपन से संबंध रखती हैं । इस तरह का व्यवहारवादी शिक्षण मुख्यत: यांत्रिक है तथा मनुष्य को चेतनारहित यंत्र मानता है जो सदैव बाह्य प्रक्रियाओं के दोहरान पर बल देती है और चेतना को गतिशील नहीं मानती । ना ही चेतनता को स्वयं में सीखने का एक निवेश मानती है । व्यवहारवादियों के लिए चेतना की विद्यमानता इसलिए नहीं है क्योंकि इसे मापा नहीं जा सकता है । अत: उनके लिए यह एक ब्लैक बॉक्स है । व्यवहारवादी शिक्षण प्रक्रियाएं इस तथ्य पर आधारित हैं कि समस्या समाधान तो केवल प्रयत्न–सुधार पद्धति से हो सकता है । दरअसल दक्षता आधारित शिक्षण मनुष्य व पशुओं के व्यवहार के बीच गुणात्मक अंतर को महत्व नहीं देता ।

दक्षता आधारित शिक्षण का उद्देश्य बच्चों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बंटी कुछ आदतों के द्वारा नियमन करके उनको याद रखने में पारंगत करना है । पूरी प्रक्रिया यांत्रिक है और मजे या मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत कर के एक धोखे के रूप में चेतना को सार्वजनिक तरीके से यांत्रिक बनाने की व्यवहारवादियों की एक नई चाल है । ◆